Knowledgeable Research (An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal) **ISSN 2583-6633**
Available Online: http://knowledgeableresearch.com Vol.03, No.6, January, 2025

काम्पिल्य (कम्पिल): प्राचीन पांचाल की दक्षिणी राजधानी का धार्मिक, ऐतिहासिक एवं पुरातात्त्विक अध्ययन

साधना कुशवाहा
एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास विभाग
स्वामी श्रद्धानन्द कॉलेज अलीपुर,दिल्ली विश्वविद्यालय।

****

सारांश:

काम्पिल्य — आज उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद जिले में काम्पिल नामक एक गाँव — कभी दक्षिणी पांचाल की राजधानी था, जो प्राचीन भारत के सोलह महाजनपदों में से एक था। लगभग तीन हजार वर्षों तक यह वैदिक, जैन और बौद्ध संस्कृतियों के संगम-स्थल पर विराजमान रहा। जैन धर्म में इसे तेरहवें तीर्थंकर विमलनाथ की जन्मभूमि के रूप में सम्मानित किया गया। महाभारत ने द्रौपदी के स्वयंवर का स्थान यहीं बताया। पुराणों ने इसे अद्वितीय बताया। बौद्ध जातक कथाओं ने इसे याद किया। फिर भी आज लगभग कोई इसका अध्ययन नहीं करता। यह लेख जैन आगमों, हिंदू पुराणों, महाकाव्य साहित्य, बौद्ध स्रोतों, अभिलेखों और पुरातात्विक निष्कर्षों के आधार पर काम्पिल्य की वास्तविकता को उजागर करता है — और यह प्रश्न उठाता है कि इसे इतनी गहराई से क्यों उपेक्षित किया गया है।

मुख्य शब्द: *काम्पिल्य, पांचाल, विमलनाथ, तीर्थंकर, जैन तीर्थयात्रा, द्रुपद, द्रौपदी, फर्रुखाबाद*

****

समय की धूल में खोया एक नगर

भारत को अपने ही नगर भुलाने की आदत है। छोटे गाँव या अज्ञात बस्तियाँ नहीं — वास्तविक महानगर, वे स्थान जो कभी उपमहाद्वीप भर के व्यापारियों और तीर्थयात्रियों को आकर्षित करते थे, दर्जनों प्राचीन ग्रंथों में जिनका उल्लेख है, जहाँ किंवदंती पुरुष राजाओं का वास था। वैशाली आज खंडहर है। चम्पा एक खेत है। हस्तिनापुर गंगा के बाढ़ के मैदान के ऊपर एक टीला मात्र है। इनमें से प्रत्येक नगर अपने समय में पृथ्वी के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण नगरों में था। आज प्रत्येक पुरातात्विक इतिहास का एक पाद-टिप्पणी मात्र है।

काम्पिल्य इसी श्रेणी में आता है। काम्पिल गाँव फर्रुखाबाद जिले के मुख्यालय फतेहगढ़ से लगभग ४५ किलोमीटर पश्चिम में, एटा और बदाँयूँ की सीमाओं के निकट स्थित है। वहाँ कुछ भी नहीं है जो किसी गौरवशाली अतीत का बोध कराए। टीले, टूटे पत्थर, एक पुराना मन्दिर। किसान आसपास के खेतों में काम करते हैं। किन्तु जब आप ऐतिहासिक प्रमाणों की परतें खोलना शुरू करते हैं — जैन आगम, महाभारत, शिव पुराण, स्कंद पुराण, विष्णु पुराण, बौद्ध जातक, मध्यकालीन तीर्थयात्रा काव्य — तो आपको एक ऐसा नगर मिलता है जिसकी चर्चा दो हजार से अधिक वर्षों तक सर्वोच्च प्रशंसा के शब्दों में होती रही। शिव पुराण सीधे कहता है: पृथ्वी पर काम्पिल के समान कोई तीर्थ नहीं है। यह कोई साधारण दावा नहीं है।

काम्पिल्य की कहानी पर पुनर्विचार का सबसे तात्कालिक कारण १९७८ की काम्पिल स्मारिका है — एक ऐसा ग्रंथ जिसे दोनों जैन सम्प्रदायों (श्वेताम्बर और दिगम्बर) के विद्वानों ने वैदिक और बौद्ध संस्कृति के इतिहासकारों के साथ मिलकर संकलित किया। इसे पढ़ते हुए आप समझते हैं कि नगर की महत्ता चार अलग-अलग प्रमाण-समूहों पर टिकी है: जैन पवित्र भूगोल में पंचकल्याणक तीर्थ के रूप में इसका स्थान; महाभारत की कथा में इसकी भूमिका; वैदिक अध्ययन के केन्द्र के रूप में इसकी सदियों

पुरानी प्रतिष्ठा; और पुरातत्त्वविदों को वहाँ वास्तव में क्या मिला है। इनमें से प्रत्येक पर गम्भीरता से विचार होना चाहिए।

पांचाल और काम्पिल्य का उदय

पांचाल उन सोलह महाजनपदों में से एक था जो प्रथम सहस्राब्दी ईसा पूर्व में गांगेय मैदान पर प्रभुत्व रखते थे। प्राचीन जैन सूत्रों ने इसे भारतीय राजनीतिक भूगोल की सर्वोच्च श्रेणी में रखा, इसकी राजधानी काम्पिल्य को चम्पा, मथुरा, वाराणसी, श्रावस्ती, साकेत, कौशाम्बी, मिथिला, हस्तिनापुर और राजगृह के साथ सूचीबद्ध किया। इस सूची पर ठहरकर विचार करने योग्य है। सूची का प्रत्येक नगर प्रसिद्ध है। काम्पिल्य को उनके समकक्ष माना गया था।

'पांचाल' नाम एक स्थापना मिथक से जुड़ा है: किंवदंती राजा भौमाश्व के पाँच पुत्र — मुद्गल, जय, बृहदीश, जविनार और कपिल — जिन्होंने मिलकर उस भूभाग पर शासन किया। पाँच पुत्र, एक राज्य। पांचाल आरम्भ से ही एक संघ था, जिसका नाम उसी बहुलता को अभिव्यक्त करता है। उनका क्षेत्र यमुना और निचली गंगा के बीच उत्तरी गांगेय मैदान को आवृत करता था, जो आज बरेली, बदाँयूँ और फर्रुखाबाद जैसे जिलों से मेल खाता है। पाणिनि की अष्टाध्यायी और सिद्धान्त कौमुदी दोनों पांचाल को एक विशिष्ट सांस्कृतिक और भाषायी क्षेत्र के रूप में मानते हैं, जो पश्चिम के कुरुओं से स्पष्टतः अलग है।

पांचाल का विभाजन हुआ। महाभारत बताता है कि ब्राह्मण द्रोण और राजा द्रुपद के बीच हुए विवाद के परिणामस्वरूप राज्य गंगा के किनारे विभाजित हो गया। द्रोण के शिष्यों ने उत्तर ले लिया, जिसका केन्द्र अहिच्छत्र (आधुनिक बरेली का रामनगर) था। द्रुपद ने दक्षिण अपने पास रखा, जिसकी राजधानी काम्पिल्य थी। बौद्ध दिव्यावदान इस व्यवस्था की पुष्टि करता है। विष्णु पुराण बताता है कि काम्पिल्य मध्यदेश की पूर्वी सीमा पर, 'ब्रह्म-क्षेत्र' के ठीक पश्चिम में स्थित था। यह भौगोलिक विवरण इसे ठीक वहाँ रखता है जहाँ आज काम्पिल है।

जैन परम्परा समयरेखा को और पीछे ले जाती है। साहित्यिक प्रमाण तर्क देते हैं कि काम्पिल्य महाभारत युद्ध से कम से कम पाँच शताब्दी पूर्व ही एक प्रमुख नगर था — और इसका अंतिम विनाश नंद वंश के हाथों हुआ, जिसे स्वयं चौथी शताब्दी ईसा पूर्व के अंत में चन्द्रगुप्त मौर्य ने उखाड़ फेंका। यदि यह कालक्रम सही है, तो काम्पिल्य में लगभग तीन हजार वर्षों का निरंतर नगरीय जीवन था। यह इसे वाराणसी और मथुरा के साथ उसी वार्तालाप में रखता है — जिन्हें हम बिना हिचकिचाहट के प्राचीन मानते हैं।

जैन पवित्र साहित्य में काम्पिल्य

किसी परम्परा ने काम्पिल्य की स्मृति को जैन धर्म जितनी परिश्रम से जीवित नहीं रखा। कारण ठोस है: यह नगर तेरहवें तीर्थंकर भगवान विमलनाथ की जन्मभूमि है। जैन दृष्टि में, जहाँ किसी तीर्थंकर के पाँच कल्याणक (प्रमुख जीवन-घटनाएँ) घटित होते हैं, वह स्थान स्थायी रूप से पवित्र हो जाता है। काम्पिल्य भारत के उन कुछ स्थलों में से एक है जहाँ एकमात्र तीर्थंकर के सभी चार पार्थिव कल्याणक — गर्भ, जन्म, दीक्षा और केवलज्ञान — हुए। यह इसे असाधारण स्तर का पंचकल्याणक तीर्थ बनाता है।

जिनप्रभ सूरि और विविधतीर्थ कल्प

जैन साहित्य में काम्पिल्य का सबसे पुराना विस्तृत विवरण विविधतीर्थ कल्प में है, जिसे आचार्य जिनप्रभ सूरि ने १३३२ ई. (विक्रम सम्वत् १३७८) में लिखा। अध्याय २५, काम्पिल्यपुर तीर्थ कल्प, जहाँ पूर्णतम चित्र मिलता है। जिनप्रभ सूरि काम्पिल्य को पूर्वी जम्बूद्वीप में पांचाल जनपद में, गंगा के तट पर रखते हैं। वे इसे विमलनाथ की जन्मभूमि के रूप में पहचानते हैं, जो इक्ष्वाकु वंश के राजा कृतवर्मा और रानी सीमा देवी के पुत्र थे। वे यह भी दर्ज करते हैं कि दसवें चक्रवर्ती हरिषेण और बारहवें चक्रवर्ती ब्रह्मदत्त भी यहीं जन्मे थे।

तीर्थयात्रा काव्य: तीन शताब्दियों में पाँच कवि

दोनों जैन सम्प्रदाय काम्पिल्य पर एकमत हैं। दिगम्बर साहित्य में यतिऋषभ की तिलोयपण्णत्ति, रविषेण की पद्मपुराण, जिनसेन की हरिवंश पुराण, और

Knowledgeable Research (An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal) **ISSN 2583-6633**
Available Online: http://knowledgeableresearch.com Vol.03, No.6, January, 2025

गुणभद्र की उत्तरपुराण सभी काम्पिल्य को विमलनाथ के जन्म कल्याणक स्थल के रूप में पहचानती हैं। श्वेताम्बर परम्परा और भी अधिक प्रदान करती है — तीर्थमाला (तीर्थयात्रा सूची) काव्यों की एक शृंखला जो लगभग १५० वर्षों में फैली है और उसी स्थान पर बार-बार लौटती है।

पुण्यसागर ने सम्वत् १६०९ में विमलनाथ के स्थल के रूप में काम्पिल का उल्लेख किया। जयविजय ने सम्वत् १६६४ में इसे 'विमल विहार' कहा और तीर्थयात्रियों का विमलनाथ की पादुकाओं का वंदन करना दर्ज किया। सत्रहवीं शताब्दी में कवि विजयसागर ने इसे 'पितियारी' कहा और उस केसर वन का वर्णन किया जहाँ राजा ने अपने व्रत लिए थे। सम्वत् १७५० की सौभाग्य विजय की तीर्थमाला 'काम्पिल्य' और 'पितियारी' दोनों नामों का प्रयोग करती है और इसे द्रौपदी का पीहर बताती है। ये कवि पौराणिक कथाएँ नहीं रच रहे थे। वे वहाँ जा चुके थे।

विमलनाथ: तेरहवें तीर्थंकर

विमलनाथ के जीवन का पुनर्निर्माण तीन प्रमुख स्रोतों से होता है: समवायांग सूत्र, विविधतीर्थ कल्प, और ज्ञानसागर सूरि का संस्कृत विमलनाथ चरित्र (सम्वत् १५१७)। जो चित्र उभरता है वह इतना विशिष्ट है कि उसे गम्भीरता से लेना होगा। उनका जन्म राजा कृतवर्मा और रानी श्यामादेवी के यहाँ माघ शुक्ल तृतीया को उत्तर भाद्रपद नक्षत्र में हुआ। उनका चिन्ह वराह था — एक विवरण जिसने विष्णु के वराहावतार के साथ रोचक तुलनाएँ जन्मी हैं।

हिंदू महाकाव्य और पौराणिक ग्रंथों में काम्पिल्य

जैन अभिलेख व्यवस्थित है, किन्तु काम्पिल्य के हिंदू संदर्भ पुराने और अधिक व्यापक हैं। वे यजुर्वेद संहिता ('काम्पिल वासिनी' — वह जो काम्पिल में वास करती है), महाकाव्यों, और उल्लेखनीय संख्या में पुराणों में मिलते हैं। साथ मिलकर वे एक ऐसे नगर का चित्रण करते हैं जो एक साथ राजनीतिक राजधानी, कर्मकांडी केन्द्र, दार्शनिक अध्ययन का स्थल, और भारतीय साहित्य की कुछ सबसे प्रसिद्ध कहानियों का मंच था।

महाभारत का काम्पिल्य

महाभारत की काम्पिल्य में रुचि तीन कथा-चापों के इर्द-गिर्द व्यवस्थित है। पहला राजनीतिक है — पांचाल का विभाजन जिसने द्रुपद को दक्षिणी भाग काम्पिल्य से शासन करने के लिए छोड़ा। महाकाव्य इसे 'काम्पिलं च पुरोत्तमम्' कहता है: काम्पिल्य का उत्कृष्ट नगर। यह महलों, प्राचीरों, खाइयों और विशाल द्वारों का वर्णन करता है।

दूसरा चाप द्रौपदी का स्वयंवर है — नगर से जुड़ी सबसे प्रसिद्ध घटना। जैन ग्रंथ ज्ञातधर्म कथा असामान्य रूप से विस्तृत विवरण देती है: समारोह से पूर्व सोलह दिनों के खेल और उत्सव; गंगा तट पर सैकड़ों स्तम्भों और पाँच रंगों के फूलों से सजा मंडप; कृष्ण वासुदेव, अर्जुन, भीम और युधिष्ठिर सहित उपमहाद्वीप भर के राजाओं का आगमन। परिणति तब आई जब अर्जुन ने जल-पात्र में केवल प्रतिबिम्ब देखकर घूमती हुई यांत्रिक मछली की आँख बेध दी। द्रौपदी ने उन्हें वरमाला पहनाई, और मंडप गूँज उठा।

पुराणों का कथन

काम्पिल्य की पौराणिक चर्चा वास्तव में उससे कहीं अधिक व्यापक है जितना अधिकांश लोग जानते हैं। शिव पुराण इसे पृथ्वी के किसी भी तीर्थ से अतुलनीय बताता है। स्कंद पुराण काम्पिल्य में विशेष रूप से पूजे जाने वाले एक सूर्य देवता — 'रिल्लकादित्य' — का उल्लेख करता है। शतपथ ब्राह्मण दर्ज करता है कि राजाओं कैव्य और दुर्मुख ने यहाँ अश्वमेध यज्ञ किया — सभी वैदिक यज्ञों में सबसे पवित्र। विष्णु पुराण नगर के नाम का उद्गम काम्पिल्य नामक राजा में खोजता है। पद्म पुराण इसे मुक्ति का तीर्थ कहता है। बौद्ध महावस्तु की पद्मावती जातक में काम्पिल्य में अठारह शिल्प श्रेणियाँ और ८४,००० की जनसंख्या दर्ज है — एक जटिल, संगठित नगर का प्रोफ़ाइल।

काम्पिल्य: एक अध्ययन केन्द्र के रूप में

धार्मिक सम्बन्धों से परे, काम्पिल्य के बारे में जो बात मुझे प्रभावित करती है वह इसकी बौद्धिक प्रतिष्ठा है। यह एक ऐसा स्थान है जो औपनिषदिक ग्रंथों, जैन ज्ञानमीमांसा पर वाद-विवाद, बौद्ध कथा साहित्य, और संस्कृत

व्याकरण ग्रंथों में — पृष्ठभूमि के रूप में नहीं, बल्कि गम्भीर बौद्धिक कार्य के स्थल के रूप में — प्रकट होता है। तीन अलग-अलग परम्पराएँ, सभी एक ही नगर पर अभिसरण करती हैं जहाँ विचारों को गम्भीरता से लिया जाता था।

बृहदारण्यक उपनिषद् राजा जनक की दार्शनिक सभा का उल्लेख करता है जिसमें कुरु-पांचाल के विद्वान आए। उस सभा में पांचाल ब्राह्मण एक ऐसे क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर रहे थे जिसकी बौद्धिक संस्कृति पहले से ही इतनी प्रतिष्ठित थी कि उसे शामिल करना उचित था। राजा प्रवाहण जैबलि, पांचाल के दार्शनिक-राजा जिन्होंने विद्वान उद्दालक आरुणि और उनके पुत्र श्वेतकेतु को चकित कर दिया, प्रारम्भिक भारतीय दर्शन की सबसे बौद्धिक रूप से जीवंत हस्तियों में से हैं।

बौद्ध सम्बन्ध

बौद्ध ग्रंथ भी काम्पिल्य को याद करते हैं, 'किप्पिल' या 'किबिल' के रूपों में। महावस्तु बताता है कि वहाँ जयदिस्स नामक राजा ने शासन किया, और बोधिसत्त का जन्म कम से कम एक पूर्व जन्म में काम्पिल्य में हुआ था। यह एक मामूली संदर्भ है, किन्तु महत्त्वपूर्ण है: यह काम्पिल्य को बौद्ध पवित्र भूगोल के ब्रह्मांड में रखता है उस क्षण में जब वह ब्रह्मांड सावधानी से निर्मित हो रहा था।

भूगोल को रोचक बनाने वाली बात यह है कि काम्पिल्य संकिसा के कितना निकट था — आठ सबसे पवित्र बौद्ध स्थलों में से एक, जहाँ बुद्ध त्रयस्त्रिंश स्वर्ग से उतरे थे। संकिसा काम्पिल से लगभग ३५ किलोमीटर दूर है। १९७८ की स्मारिका ने इसे प्राचीन फर्रुखाबाद का 'त्रिरत्न' कहा — जैन काम्पिल्य, बौद्ध संकिसा, और वैदिक-ब्राह्मणिक कन्नौज। यह केवल उद्बोधक नहीं है — यह एक वास्तविक सांस्कृतिक यथार्थ का वर्णन करता है।

पुरातत्त्वविदों को क्या मिला — और उन्होंने अभी तक क्या नहीं खोजा

कनिंघम का १८७७-७८ का सर्वेक्षण

भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण के संस्थापक जनरल अलेक्जेंडर कनिंघम ने १८७७-७८ में काम्पिल का दौरा किया और इसकी पहचान प्राचीन काम्पिल्य से की। उन्हें संरचनात्मक अवशेष और स्थल के एक टीले पर गंगा देवी की छवि वाला एक बड़ा पत्थर का शिलापट्ट मिला — एक ऐसी खोज जो धार्मिक महत्त्व और निरंतर अधिभोग की पुष्टि करती है। कनिंघम की रिपोर्ट ने फर्रुखाबाद की पहचान को ठोस विद्वत्तापूर्ण आधार पर स्थापित किया। किन्तु इसने यह भी उजागर किया कि कितना कुछ पहले ही खो चुका था, और कितना अन्वेषण की प्रतीक्षा में था।

चित्रित धूसर मृद्भांड, गुप्तकालीन मूर्तिकला और पेरिस का गणेश

१९५० के दशक में बी.बी. लाल ने महाभारत-कालीन स्थलों को लक्षित करते हुए भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण का कार्यक्रम संचालित किया। इन उत्खननों में पांचाल क्षेत्र सहित उत्तरी स्थलों से चित्रित धूसर मृद्भांड (PGW) — उत्तर वैदिक और प्रारम्भिक लौह युग संस्कृति का भौतिक अभिलक्षण (लगभग ११००-६०० ईसा पूर्व) — प्राप्त हुए। काम्पिल स्वयं किसी प्रमुख स्तरीय उत्खनन का विषय नहीं रहा, किन्तु इसके आसपास से PGW ठीकरों की सूचनाएँ मिली हैं।

जो प्राप्त हुआ है — मुख्यतः जैन मंदिर परिसर और आसपास के खेतों से — वह उत्कृष्ट कार्य है। मंदिर में विमलनाथ की एक पत्थर की प्रतिमा है जिसे विद्वान लगभग १८०० वर्ष पूर्व की बताते हैं, जो इसे गांगेय मैदान में जैन मंदिर की सबसे पुरानी जीवित प्रतिमाओं में से एक बनाती है। काम्पिल से नृत्य करते गणेश की एक मूर्ति पेरिस में भारतीय कला प्रदर्शनी के लिए चयनित की गई थी। शेषशायी विष्णु, सूर्य, और अनेक तीर्थंकरों की गुप्तकालीन प्रतिमाएँ भी प्रकाश में आई हैं।

मध्यकालीन शताब्दियों में जीवित रहना

काम्पिल्य का शास्त्रीय और आधुनिक काल के बीच क्या हुआ, यह केवल पतन की कहानी नहीं है। यह असाधारण लचीलेपन की भी कहानी है।

१९७८ की स्मारिका दस्तावेज़ करती है कि कैसे बारहवीं और तेरहवीं शताब्दियों में पृथ्वीराज तोमर, जयचंद गहड़वाल और अन्य प्रमुख शक्तियों की पराजय के बाद, पांचाल क्षेत्र तुर्क सुल्तानों के विरुद्ध स्थानीय प्रतिरोध के सबसे दृढ़ क्षेत्रों में से एक बन गया। बलबन, अलाउद्दीन खिलजी, मुहम्मद तुगलक, और फिरोज तुगलक — सभी ने यहाँ अभियान चलाए। काम्पिल्य के आसपास के वन इतने दुर्जेय थे कि बड़ी-बड़ी सेनाएँ भी उनमें प्रवेश से हिचकिचाती थीं। पातियाली, भोजपुर, काम्पिल और रामपुर (कटेहर) जैसे स्थान जन प्रतिरोध के केन्द्र बने जिन्हें सुल्तान सैन्यतः दबा तो सकते थे, किन्तु पूर्णतः वश में नहीं कर सकते थे।

मुहम्मद तुगलक ने १३४५ ई. में काम्पिल में कई भवन नष्ट किए। वह विनाश दस्तावेज़ीकृत है। फिर भी पुरानी जैन प्रतिमाएँ उससे बची रहीं — वर्तमान मंदिर में अभी भी उस १८०० वर्ष पुरानी विमलनाथ की मूर्ति सहित कई प्रतिमाएँ हैं। समुदाय ने जो बचा सका उसे छुपाया, जो आवश्यक था उसे पुनर्निर्मित किया, और आता रहा।

जैन समुदाय की निरंतर संलग्नता

पिछले कई दशकों से, श्री जैन श्वेताम्बर महासभा काम्पिल्य को किसी की सूची में बनाए रखने वाली प्राथमिक संस्थागत शक्ति रही है। यह एक मामूली बात नहीं है। उनके निरंतर प्रयास के बिना — १९७८ की स्मारिका संकलित करना, काम्पिल महोत्सव आयोजित करना, मंदिर परिसर की देखभाल करना — यह स्थल जितना है उससे कहीं अधिक अज्ञात होता।

काम्पिल्य में होने वाली सबसे महत्त्वपूर्ण बात एक गम्भीर उत्खनन है। ग्रंथों के साक्ष्य इतने ठोस हैं कि पुरातत्त्वविद् इसे उच्च-पूर्व-सम्भाव्यता स्थल कहेंगे — वह प्रकार का स्थान जहाँ आप उचित आत्मविश्वास के साथ खुदाई करते हैं कि कुछ होगा। टीले अनेक हैं। अघाटिया टीला, अनुमानित द्रुपद महल स्थल, जैन मंदिर परिसर, और कई अनुत्खनित ऊँचाइयाँ सभी स्तरीय जाँच की माँग करती हैं।

अहिच्छत्र की तुलना शिक्षाप्रद है। काम्पिल से नब्बे किलोमीटर उत्तर में, अहिच्छत्र उत्तरी पांचाल की राजधानी थी। उसकी खुदाई हुई। परिणाम असाधारण थे — पत्थर की मूर्तियाँ, सिक्के, मिट्टी की मूर्तियाँ, चौथी शताब्दी ईसा पूर्व से मध्यकाल तक के शिलालेख। काम्पिल्य के लिए साहित्यिक प्रमाण तुलनीय है। इससे जुड़ी परम्पराओं की विविधता, यदि कुछ है, तो अधिक है। किसी प्रमुख उत्खनन का अभाव इस बात का संकेत नहीं है कि वहाँ कुछ नहीं है। यह इस बात का संकेत है कि किसी ने ठीक से नहीं देखा।

१९७८ की स्मारिका ने तीन संस्थाओं का प्रस्ताव रखा: कलाकृतियों को रखने के लिए एक स्थल संग्रहालय, प्राचीन पांचाल संस्कृति के अध्ययन के लिए एक शोध संस्थान, और एक पुस्तकालय। ये प्रस्ताव पूरी तरह वैध हैं। वे आकांक्षापूर्ण नहीं हैं — वे न्यूनतम अधोसंरचना हैं जो इस दस्तावेज़ीकृत महत्त्व के स्थल के लिए आवश्यक है। विद्यमान जैन मंदिर, रामेश्वर धाम, द्रौपदी कुंड, और द्रुपद महल टीला मिलकर वास्तविक विविधता का एक विरासत पथ बनाते हैं। निकटवर्ती संकिसा (बौद्ध) और कन्नौज (हिंदू-वैदिक) को जोड़ें, और आपके पास एक बहु-धर्मीय विरासत परिपथ का आधार है जिसका क्षेत्र में कोई समानांतर नहीं है।

काम्पिल्य हमें प्राचीन भारत के बारे में क्या बताता है

तीन विचार उल्लेख के योग्य लगते हैं।

प्रथम: काम्पिल्य प्राचीन भारतीय नगरीयता के वास्तविक बहु-धार्मिक चरित्र का एक केस अध्ययन है। जैन कम से कम आठ शताब्दियों के विस्तार में वहाँ तीर्थयात्रा करते रहे। वैष्णवों ने उसके क्षेत्र को वराहावतार से जोड़ा। शैवों ने महत्त्वपूर्ण लिंग स्थापित किए। महाकाव्य कथा ने द्रौपदी का स्वयंवर यहाँ रखा। बौद्धों ने इसे जातकों में सुरक्षित रखा। यह सहअस्तित्व राजनीतिक रूप से सही अमूर्त रूप में नहीं है। यह एक विशेष स्थान की संरचनात्मक वास्तविकता है जहाँ विभिन्न धार्मिक अर्थ एक ही भौतिक परिदृश्य पर समय के साथ परतों में जमते रहे।

द्वितीय: काम्पिल्य का पतन यह दर्शाता है कि भारतीय नगर वास्तव में कैसे मरते हैं। गंगा ने अपना रास्ता बदला। राजनीतिक संरचना बदली। मध्यकालीन विनाशों ने अपना प्रभाव डाला। कोई एकल विपदा काम्पिल्य को समाप्त नहीं किया; यह शताब्दियों में धीरे-धीरे क्षरण था। यह प्रतिरूप इसलिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इसका अर्थ है कि विरासत अभी भी पुनर्प्राप्त करने योग्य है।

तृतीय: काम्पिल्य की स्मृति के संरक्षक के रूप में जैन समुदाय की भूमिका को प्रत्यक्ष स्वीकृति की आवश्यकता है। तीर्थमालाएँ रचते भिक्षुओं, अपभ्रंश ग्रंथों को हिंदी में अनुवाद करने वालों, स्मारिका संकलित करने वाली संस्थाओं, और कठिनाइयों के शताब्दियों में मंदिर परिसर बनाए रखने वाले गृहस्थ समुदायों के श्रम के बिना, इस नगर का अतीत लगभग पूरी तरह अगम्य होता। विरासत संरक्षण आमतौर पर सरकारी कार्य माना जाता है। काम्पिल्य याद दिलाता है कि समुदायों ने अक्सर वह काम किया है जो सरकार ने नहीं किया।

निष्कर्ष

काम्पिल्य दक्षिणी पांचाल की राजधानी था, जो प्राचीन भारत के सोलह महाजनपदों में से एक था। जैन इसे विमलनाथ की जन्मभूमि, प्रथम श्रेणी का पंचकल्याणक तीर्थ कहते हैं। महाभारत में द्रौपदी का स्वयंवर यहाँ होता है। पुराण इसे सभी तीर्थों में अतुलनीय कहते हैं। बौद्ध जातक इसे याद करते हैं। मध्यकालीन भिक्षुओं ने यहाँ तीर्थयात्राएँ कीं और अपनी दृष्टि में जो पाया उसे काव्यों में उतारा। कनिंघम ने यहाँ आकर पहचान की पुष्टि की। गुप्तकालीन और मध्यकालीन मूर्तियाँ यहाँ से प्राप्त हुई हैं। यहाँ की मिट्टी से एक नृत्य करते गणेश पेरिस की प्रदर्शनी के लिए उपयुक्त थे।

इनमें से किसी ने भी व्यवस्थित उत्खनन, संरक्षण और वह विद्वत्तापूर्ण ध्यान नहीं दिलाया जिसका यह स्थल हकदार है। काम्पिल के टीले ठीक से नहीं खोदे गए हैं। कोई स्थल संग्रहालय नहीं है। १९७८ की स्मारिका की सिफारिशें — एक संग्रहालय, एक शोध संस्थान, एक पुस्तकालय — लगभग आधी शताब्दी बाद भी काफी हद तक अनिष्पादित हैं। जैन समुदाय मंदिर की देखभाल करता रहा और काम्पिल महोत्सव का आयोजन करता रहा। पुरातत्त्व ने अनुसरण नहीं किया।

शिव पुराण का दावा — कि पृथ्वी पर काम्पिला के समान कोई तीर्थ नहीं है — अपने समय के लिए अतिशयोक्ति नहीं थी। साहित्यिक संदर्भों का घनत्व, परम्पराओं की विविधता, नगरीय जीवन की दस्तावेज़ीकृत दीर्घायु: सब कुछ एक ऐसे नगर की ओर संकेत करता है जो वास्तव में महत्त्वपूर्ण था। यह पुनः प्राप्त करना — ठीक से, पुरातात्विक रूप से, उस गम्भीरता के साथ जो प्रमाण की माँग है — वह काम है जो भारत की विद्वत्तापूर्ण और सरकारी संस्थाओं को अभी करना शेष है।

संदर्भ और स्रोत

प्राथमिक स्रोत

- आचार्य जिनप्रभ सूरि। विविधतीर्थ कल्प (१३३२ ई./विक्रम सम्वत् १३७८)। अध्याय २५: काम्पिल्यपुर तीर्थ कल्प। हिंदी अनुवाद: भँवरलाल नाहटा।
- समवायांग सूत्र (जैन आगम)। विमलनाथ का जीवन-वृत्तांत।
- ज्ञातधर्म कथा (जैन आगम)। काम्पिल्य में द्रौपदी के स्वयंवर का विस्तृत वर्णन।
- उत्तरपुराण (गुणभद्र)। काम्पिल्य विमलनाथ के जन्म-कल्याणक स्थल के रूप में।
- महाभारत (आदि पर्व; उद्योग पर्व)। द्रुपद, द्रौपदी का स्वयंवर, राजा ब्रह्मदत्त।
- शिव पुराण। काम्पिला की अतुलनीयता पर नंदी का कथन।
- स्कंद पुराण। रिल्लकादित्य; काम्पिल्य के यज्ञदत्त दीक्षित।
- विष्णु पुराण (४.१९.५८-५९)। राजा काम्पिल्य और नगर का नाम।
- बृहदारण्यक उपनिषद्। प्रवाहण जैबलि और पांचाल दार्शनिक परम्परा।
- ज्ञानसागर सूरि। विमलनाथ चरित्र (संस्कृत, सम्वत् १५१७)।

मध्यकालीन तीर्थमालाएँ

• पुण्यसागर कुष्ठ। सम्मेदशिखर तीर्थ माला (सम्वत् १६०९)।

• जयविजय। सम्मेदशिखर तीर्थ माला (सम्वत् १६६४)। काम्पिल को 'विमल विहार' कहा।

• सौभाग्य विजय। तीर्थमाला (सम्वत् १७५०)। काम्पिल्य और पितियारी नाम; द्रौपदी का पीहर।

• यति जयविजय। काम्पिल्य पर यात्रा-वृत्तांत (१७७४ ई.)।

आधुनिक शोध

• चटर्जी, बी.के. जैन धर्म का व्यापक इतिहास। यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस, १९५३।

• कनिंघम, अलेक्जेंडर। भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण रिपोर्ट, खंड XII (१८७७-७८)। काम्पिल का विवरण।

• लाल, बी.बी. 'हस्तिनापुर और अन्य अन्वेषणों में उत्खनन।' प्राचीन भारत, क्र. १०-११ (१९५४-५५)।

• डॉ. जगदीश प्रसाद जैन एवं डॉ. ज्योतिप्रसाद जैन। 'जैन साहित्य में काम्पिल।' काम्पिल स्मारिका, १९७८।

• शालीन सिंह (सं.)। काम्पिल: तीर्थमका — संकलित स्मारक ग्रंथ, १९७८। फर्रुखाबाद।

Corresponding Author: Sadhna Kushwaha
E-mail: sadhnakushwaha9868@gmail.com
Received: 03 January, 2025; Accepted: 10 January, 2025. Available online: 30 January, 2025
Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension)
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-Noncommercial 4.0 International License